

मलिक मुहम्मद जायसी का प्रकृति-चित्रण

हिंदी साहित्य के सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी प्रेमाख्यान काव्य परंपरा के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उनकी प्रसिद्ध कृति 'पद्मावत' न केवल प्रेम, त्याग और आध्यात्मिकता का महाकाव्य है, बल्कि उसमें प्रकृति-चित्रण भी अत्यंत सजीव, भावपूर्ण और प्रतीकात्मक रूप में मिलता है। जायसी का प्रकृति-चित्रण केवल सौंदर्य वर्णन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मानव भावनाओं, सूफी दर्शन और आध्यात्मिक अनुभूतियों से गहराई से जुड़ा हुआ है।

जायसी ने प्रकृति को जीवंत और मानवीय रूप में प्रस्तुत किया है। उनके काव्य में प्रकृति कहीं नायिका के सौंदर्य की सहचरी बनती है, तो कहीं विरह की पीड़ा को और तीव्र कर देती है। वन, पर्वत, नदी, पुष्प, पवन, चंद्रमा, सूर्य, ऋतुएँ—ये सभी तत्व उनके काव्य में केवल पृष्ठभूमि नहीं हैं, बल्कि कथा और भावों के सक्रिय अंग हैं। उदाहरण के लिए, जब नायक-नायिका के मिलन का वर्णन होता है, तब प्रकृति भी उल्लास से भर उठती है—फूल खिलते हैं, पक्षी गाते हैं और पवन मंद-मंद बहने लगती है। मिलन में प्रकृति उल्लास से भरी होती है उसी तरह वियोगिनी नायिका के दुःख को बढ़ाती भी है

सावन बरस मेह अति पानी, भरनी परी हौं विरह जुरानी ।

रक्त के आँसू परही भुईं टूटी , रैंगी चली जनु वीर बहुटी ।

ऋतु-वर्णन जायसी के प्रकृति-चित्रण का एक प्रमुख पक्ष है। उन्होंने वसंत, वर्षा और शरद ऋतु का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है। वसंत ऋतु प्रेम और सौंदर्य की प्रतीक बनकर आती है, जहाँ आम्र-मंजरी, कोयल की कूक और पुष्पों की सुगंध प्रेम भाव को प्रगाढ़ बनाती है। वहीं वर्षा ऋतु विरह और मिलन—दोनों भावों को व्यक्त करती है। मेघों की गर्जना, बिजली की चमक और वर्षा की फुहारें नायिका के हृदय की व्याकुलता का प्रतीक बन जाती हैं।

जायसी के प्रकृति-चित्रण की एक विशेषता उसका प्रतीकात्मक स्वरूप है। सूफी काव्य परंपरा के अनुसार वे सांसारिक प्रकृति के माध्यम से आध्यात्मिक सत्य को प्रकट करते हैं। उनके यहाँ प्रकृति ईश्वर-प्रेम की ओर संकेत करती है। जैसे—पद्मिनी का सौंदर्य केवल लौकिक नहीं है, बल्कि वह परम सत्य और ईश्वरीय सौंदर्य का प्रतीक है। पद्मावती के केश खोलने मात्र से आकाश पाताल में अँधेरा हो जाता है—

बेनी छोरी झारु जो बारा, सरग पतार होई अँधियारा।

उसी प्रकार प्रकृति के विविध रूप आत्मा और परमात्मा के संबंध को समझाने का माध्यम बनते हैं।

प्रकृति के मानवीकरण में भी जायसी सिद्धहस्त हैं। उनके काव्य में पवन संदेशवाहक बनती है, चंद्रमा साक्षी बनता है और वन नायिका के दुःख में सहभागी दिखाई देते हैं। यह मानवीकरण पाठक के हृदय में गहरी संवेदना उत्पन्न करता है और काव्य को भावनात्मक रूप से प्रभावशाली बनाता है।

भाषा और शैली की दृष्टि से भी जायसी का प्रकृति-चित्रण सराहनीय है। उन्होंने अवधी भाषा में सरल, लोकजीवन से जुड़ी उपमाओं और रूपकों का प्रयोग किया है। उन्होंने लोकोक्तियों, मुहावरों तथा सूक्तियों का भी समुचित प्रयोग किया है..

१. साहस जहाँ सिद्धि तहँ होई

२. धनि सो पुरुख जस कीरती जासु। फूल मरे पर मरे ना बासु।

इससे प्रकृति-वर्णन सहज, स्वाभाविक और जनसामान्य के लिए बोधगम्य बन जाता है। अलंकारों का प्रयोग भी स्वाभाविक है, जिससे वर्णन में न तो कृत्रिमता आती है और न ही बोझिलता। सूखते हुए सरोवर से विरही हृदय की उपमा दर्शनीय है..

सरवर हिय घटत निति आई, टूक टूक होई बिहराई।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मलिक मुहम्मद जायसी का प्रकृति-चित्रण हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखता है। उनकी दृष्टि में प्रकृति केवल दृश्य सौंदर्य नहीं, बल्कि प्रेम, विरह, साधना और आध्यात्मिक अनुभूति की संवाहिका है। उनके काव्य में प्रकृति मानव जीवन और ईश्वर-प्रेम के बीच सेतु का कार्य करती है। इसी कारण जायसी का प्रकृति-चित्रण आज भी पाठकों को भावविभोर करता है और साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान है।

पुष्पा महाराज

हिंदी विभाग

बी.ए.सेमेस्टर 2

(MJC 2)